संवाद

परीक्षा के नाम से ही लगभग सभी बच्चों के चेहरे का रंग फ़ीका पड़ जाता है। मन में घबराहट होने लगती है। लेकिन एक दिन एक विद्यालय में चौथी कक्षा के विद्यार्थी बहुत ही तन्मय होकर अपनी-अपनी कॉपी में लिखने में व्यस्त थे। कभी वे कुछ पलों के लिए लिखना छोड़कर कुछ सोचते, कुछ मुस्कराते और फिर लिखना शुरू कर देते। शिक्षिका से बातचीत करने पर उनकी इस तल्लीनता का कारण मालूम पड़ा। शिक्षिका ने बच्चों को लिखने के लिए विषय दिया था-मेरी माँ।

जितना आनंद बच्चों को अपनी-अपनी माँ के बारे में लिखने में आ रहा था, उतना ही आनंद शिक्षिका को भी कॉपियाँ जाँचने में मिला। कॉपियाँ जाँचने के दौरान ही शिक्षिका ने अपनी साथी शिक्षिका से कहा, "इस बच्चे ने अपनी माँ के बारे में कितनी अनूठी बातें लिखी हैं लेकिन भाषा ज्ञान तो इस बच्चे को है ही नहीं।" और उन्होंने कॉपी के पूरे पन्ने में जहाँ-जहाँ मात्राओं की अशुद्धियाँ थीं उन सभी स्थानों पर गोले बना दिए।

साथी शिक्षिका ने बच्चे की कॉपी देखी। बच्चे ने लिखा था-मेरी माँ बहुत अच्छी हैं। वह मुझे बहुत प्यार करती हैं। उनकी चार आँखें हैं। दो चेहरे पर और दो चेहरे के पीछे। मैं कहीं भी कोई शरारत करता हूँ तो मेरी माँ को तुरंत मालूम पड़ जाता है। मेरी माँ मेरे मन की बात न जाने कैसे समझ लेती हैं। पता नहीं वह कैसे जान लेती हैं कि मेरा क्या खाने का मन कर रहा है। मेरी माँ सब कुछ जानती हैं।

चौथी कक्षा के बच्चे की इस अभिव्यक्ति को पढ़कर साथी शिक्षिका को भी सुखद आश्चर्य हुआ। वह बोलीं, "वाह! कितनी मौलिक अभिव्यक्ति है। इस बच्चे ने तो कमाल का लिखा है और आपने शाबाशी के दो शब्द लिखने के बदले पूरा पन्ना लाल-लाल गोलों से भर दिया। आपने तो सरासर अन्याय किया है इस बच्चे के साथ।" इस पर चौथी कक्षा की शिक्षिका तुनककर बोली, "आप भी मुझे दोष दे रही हैं। हिंदी की परीक्षा में बच्चे की वर्तनी की इतनी अशुद्धियाँ हैं तो गोले तो लगाने ही पड़ेंगे। केवल अभिव्यक्ति ही तो भाषा नहीं है।"

हमारे विद्यालयों में भाषा की कक्षा में कमोबेश यही स्थिति है। बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति के आत्मविश्वास को प्रमुखता देने के स्थान पर परख की कसौटी यही होती है कि बच्चे ने मानक भाषा का प्रयोग किया है या नहीं? उच्चारण शुद्ध है या नहीं? इस कसौटी पर खरे नहीं उतरने पर कभी बच्चे को डाँट मिलती है तो कभी वह उपहास का पात्र बना दिया जाता है। इसी प्रकार से लिखित अभिव्यक्ति

को मापने का पैमाना भी विचारों की मौलिकता व सृजनशीलता के बजाए वर्तनी की शुद्धता ही होता है। परिणाम यह होता है कि उर्वर कल्पनाशीलता लिए कक्षा में प्रविष्ट विद्यार्थी की सृजनात्मकता मानक भाषा, शुद्ध उच्चारण तथा त्रुटिहीन वर्तनी के चक्रवात में फँसकर असमय दम तोड़ देती है।

भाषा की कक्षा में शिक्षकों के इस प्रकार के रवैये के मूल में दरअसल कई शिक्षक साथियों में भाषा तथा भाषा शिक्षण को लेकर पुख्ता समझ का अभाव है।

इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए *प्राथमिक शिक्षक* पत्रिका का यह अंक भाषा शिक्षण संबंध विशेष लेखों को लेकर आपके समक्ष प्रस्तुत है। हमें विश्वास है कि इस अंक में दिए गए विभिन्न लेख भाषा शिक्षण से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों जैसे- भाषा क्या है?, भाषायी संकेतक, सतत् और समग्र आकलन आदि के बारे में हमारे शिक्षक साथियों को भाषा की कक्षा को आनंददायी बनाने में सहायक होंगे।

हमारे सभी शिक्षक साथियों को यह बात भी ध्यान में रखनी होगी कि भाषा शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक ही सीमित नहीं है। हर विषय की कक्षा भाषा की कक्षा है तथा प्रत्येक विषय का शिक्षक भाषा का शिक्षक है। भाषा की अच्छी समझ प्रत्येक विषय को समझने में विद्यार्थी की मदद करती है जिसका सुखद परिणाम बच्चे की बेहतर उपलब्धि पर पड़ता है।

हम सभी इस तथ्य से भली भाँति अवगत हैं कि बच्चा जब विद्यालय में प्रवेश करता है तो भाषा के प्रयोग से बखूबी परिचित होता है। उसके पास शब्दों का विपुल भंडार होता है। शिक्षक को तो बस बच्चे में निहित इस भाषायी क्षमता को पुष्पित और पल्लवित करने में सहयोग करना है। शिक्षक ही है जो भाषा की कक्षा में बच्चे की रुचि और अधिक जाग्रत कर सकता है। शिक्षक द्वारा भाषा सीखने-सिखाने के लिए कक्षा में अपनायी गई विधियों का बच्चे की भाषा सीखने में रुचि पर बहुत अधिक असर पड़ता है। शिक्षक का भाषा शिक्षण का तरीका रोचक होगा तो बच्चे की भी रुचि बनी रहती है, अन्यथा बड़ी ललक से पढ़ने की दहलीज़ पर कदम रखने वाले बच्चे की भी विद्यालय से विमुखता बनते देर नहीं लगती।

यह भी कहा जाता है कि जो व्यक्ति जितनी अधिक किताबें पढ़ता है उसका भाषा पर भी अधिकार उतना ही अच्छा होता जाता है। इसलिए ज़रूरी है कि बच्चों में बचपन से ही किताबें पढ़ने की ललक जगायी जाए और इस कार्य में शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। बच्चों के लिए कक्षा में प्रिंट समृद्ध सृजित कर, उन्हें रंग-बिरंगी आकर्षक चित्रों से सुसज्जित किताबें देकर, इन किताबों पर चर्चा के द्वारा प्रत्येक बच्चे को किताबों की दुनिया की सैर कराकर

नन्हे पाठक से स्थायी पाठक बनने की ओर ले जाने में शिक्षक अहम् भूमिका निभा सकते हैं। लेकिन यह सब हमारे शिक्षक साथी तभी कर सकते हैं जब उनमें स्वयं भी नयी-नयी किताबें पढ़ने की चाह हो। यह चाह प्रत्येक व्यक्ति में चाहे वह शिक्षक हो या किसी अन्य व्यवसाय से जुड़ा हो ज़रूर होनी चाहिए। इसी संदर्भ में श्री भवानी प्रसाद मिश्र की यह पंक्तियाँ याद आ रही हैं –

कुछ लिख के सो
कुछ पढ़ के सो
तू जिस जगह से जागा सवेरे
उस जगह से बढ़ के सो

और यह तभी संभव है जब हम नित नया कुछ पढ़ने की आदत डालें।

अकादमिक संपादक